an>

Title: Regarding limiting life sketch of Chhatrapati Shivaji Maharaj to just five lines in class 7th NCERT book in Maharashtra.

श्री राजन विचारे (ठाणे) : माननीय अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से इस सदन का ध्यान महाराष्ट्र में एनसीईआरटी द्वारा कक्षा 7वीं, दसवीं और 12वीं की किताबों के पाठ्यक्रम की तरफ आकर्षित करना चाहता हूं, जिनमें भारतीय सभ्यता को अपमानित किया गया है और कम शब्दों में इतिहास को दर्शाया गया है।

मैं आपके माध्यम से इस सदन को अवगत कराना चाहता हूँ कि महाराष्ट्र की एनसीईआरटी की पाठ्यक्रम पुस्तकों में, 7वीं कक्षा की किताबों में मराठा साम्राज्य के संस्थापक महान देशभक्त दृढनिश्चयी, राष्ट्रनिर्माता एवं कुशल प्रशासक श्री छत्रपति शिवाजी महाराज जी के जीवन का उल्लेख सिर्फ पांच लाइनों में किया गया है, जबकि श्री छत्रपति शिवाजी महाराज राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता के जीवंत प्रतीक तथा संस्थापक थे, जिनकी सैन्य प्रतिभा ने मुगलों जैसे शक्तिशाली शासक को विचलित कर दिया था। इतिहासकारों के अनुसार श्री छत्रपति शिवाजी महाराज केवल निर्भीक सैनिक व सफल विजेता ही नहीं थे, बल्कि अपनी प्रजा के प्रबुद्धशील शासक भी थे। जिस स्वतंत्रता की भावना से वह प्रेरित हुए थे, उसे उन्होंने अपने देशवासियों के हृदय में भी प्रज्जवलित किया था। श्री छत्रपति शिवाजी महाराज यथार्थ में एक व्यावहारिक आदर्शवादी थे, इसलिए उन्हें आज भी स्वराज्य के संस्थापक तथा दुनिया के कुशल सेनानी, प्रजा के हितदक्ष राजा, सर्वधर्म समभाव रखने वाले कुशल प्रशासक एवं दूरदृष्टि रखने वाला आदर्श राजा कहा जाता है। आज भी करोड़ों युवा उनको आदर्श मानते हैं। भारतवर्ष के लिए तथा सभी के लिए वह एक आदर्श थे। ऐसी महान विभूति के इतिहास का सभी छात्रों को ज्ञान होना जरूरी है तथा यह शासन का परम कर्त्तव्य भी है। इस संबंध में हिन्दू जनजागृति समिति ने 19 मार्च, 2015 को एक ज्ञापन भी केन्द्र सरकार को सौंपा था, जिस पर अभी तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है। मैं सदन के माध्यम से माननीय शिक्षा मंत्री जी से अनुरोध करता हूं कि वह एनसीईआरटी को निर्देश देकर महान श्री छत्रपति शिवाजी महाराज के विस्तृत जीवन एवं उनके वास्तविक इतिहास को उपरोक्त कक्षाओं के पाठ्यक्रमों में शामिल करने की पहल करें तथा शासन अपना कर्त्तव्य निभाए। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष :

श्री भैरों प्रसाद मिश्र,

श्री श्रीरंग आप्पा बारणे,

श्री अरविंद सावंत एवं

कुँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल को श्री राजन विचारे द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।